खेतड़ी नरेश अभय सिंह के अंग्रेजों के साथ सम्बंध

डॉ. अन्जू शर्मा*

बाघसिंह की मृत्युपरान्त 1800 ई. में राजा अभयसिंह खेतड़ी के शासक बने।[1] राजा अभय सिंह के राज्यारोहण के समय एक तरफ तो अंग्रेज मराठों की शक्ति को समाप्त करने में लगे हुए थे तो दूसरी ओर राजपूताना मराठों की लूट से आतंकित था।मराठा पेशवा के 1802 ई. में बसीन की संन्धि के द्वारा अंग्रेजी अधीनता स्वीकार कर लेने के बाद अंग्रेजों ने मराठा सरदारों को भी अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया। मराठा सरदार होल्कर एवं सिंन्धियां का राजपूताना में विशेष प्रभाव था। इसको समाप्त करने के लिए अंग्रेजों ने देशी राज्यों से सहायता लेने के लिए देशी राज्यों में हस्तक्षेप न करने की अपनी प्रचलित नीति में परिवर्तन किया। राजपूत राजामराठों के आतंक से मुक्त तो होना चाहते थे परन्तु वे अंग्रेजों से भी आशंकित थे। बड़े राज्यों के साथ संन्धि में होने वाली देरी को देखते हुए अंग्रेजों ने छोटे राज्यों व अधीनस्थ सामंतो से संन्धि करने का प्रयास किया। इसी कारण खेतड़ी के अंग्रेजों के साथ सहयोगात्मक सम्बंध स्थापित हुए।

राजा अभय सिंह दूरदर्शी व्यक्ति थे। उन्होंने अंग्रेजों की उभरती शक्ति को मराठों के शक्तिशाली विरोधी के रूप में देखा और अंग्रेजों से सहयोग करने का निर्णय लिया। अंग्रेजों के सम्बंध स्थापित करने में लेफिटनेंट कर्नल डब्लू.एल. गार्डनर का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। गार्डनर का एक पत्र, जो उन्होंने उत्तर भारत में अंग्रेजों के मुख्यालय में कमाण्डर इन चीफ जनरल लेक को भेजा था, से खेतड़ी और अंग्रेजों के प्रारम्भिक सम्बंधों की जानकारी मिलती है।[2] गार्डनर के पत्र से पता चलता है कि अभय सिंह के साथ उनकी मित्रता होने एवं उनके आग्रहपूर्ण निवेदन के कारण अभय सिंह अंग्रेजों के साथ सम्बंध स्थापित करने लिए तैयार हुए और उनकी आज्ञा से खेतड़ी तथा अन्य दुर्गों पर 1 अक्टुबर 1803 ई. के दिन अंग्रेजी ध्वज फहराया। पत्र से पता चलता है कि खेतड़ी का वकील 300 राजपूत सवारों सहित जनरल लेक की सेवा में उपस्थित हुआ था। खेतड़ी के सवारों ने सिंन्धिया के विरूद्ध 1नवम्बर 1803 ई. को लड़े गये लासवाड़ी के युद्ध में अंगेजों की ओर से भाग लिया।[3] खेतड़ी की सामरिक सहायता और सैनिकों के वीरत से सन्तुष्ट हो कर लार्ड लेक ने 2 दिसम्बर 1803 को कोटपूतली का परगना 20000 रूपये वार्षिक के इस्तमरार पर खेतड़ी को प्रदान किया था।[4]

खेतड़ी के द्वारा अंग्रेजों की सहायता करने का क्रम आगे भी चला। जसवंत राव होल्कर के विरूद्ध कर्नल मानसन के अभियान में भी खेतड़ी के 500 सवारों ने भाग लिया था।[5] इन सवारों को कैप्टन ल्यूकन के नेतृत्व में रखा गया था। मानसन के कुख्यात प्रत्यार्पण (Retreat) के समय इन सैनिकों ने होल्कर का बहादुरी से सामना किया, परन्तु मानसन की गलत रणनीति के कारण वे 1804 ई. में मराठों से घिर गये और ल्यूकन सहित खेतड़ी के लगभग सभी सैनिक मार डाले गये।

सितम्बर 1804 ई. में मराठों से नारनौल को बचाने में भी खेतड़ी के सैनिकों ने ठाकुर किशनसिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों की मदद की थी। नारायण राव के नेतृत्व में मराठों ने कानोड़ और नारनौल पर अधिकार करने के लिए किये गये अभियान के समय अंग्रेजी सेना भरतपुर के किले को जीतने के लिए घेरा डालने में व्यस्त थी। इस कारण अंग्रेजों को अतिरिक्त सैनिकों की सख्त आवश्यकता थी। लार्ड लेक ने खेतड़ी से सैन्य सहायता मांगी।[6] खेतड़ी के द्वारा ठाकुर किशनसिंह भोजराज के नेतृत्व में भेजे गए 500 सवारो की मदद से टर्नबुल मराठों को भगाने में सफल रहा।[7] इस पर प्रसन्न होकर लार्ड लेक ने 1803 ई. में इस्तमरार पर दिया कोटपूतली का परगना को 6 अप्रेल 1806 ई. में निशुल्क ग्रांट में बदल दिया।[8] राजा अभयसिंह ने इस अवसर पर अंग्रेजी सरकार को 60000 रू का नजराना दिया।[9]

1805 ई में मराठा सरदारों के द्वारा अंग्रेजों के साथ सन्धि कर लेने के बाद अंग्रेजों ने देशी राज्यों के प्रति पुनः अहस्तक्षेप की नीति अपनाई। लार्ड लेक, चार्ल्स मेटकॉफ, सर जार्ज बार्लो (1805–07 ई.), लार्ड मिण्टों (1807 ई.–1813 ई.) आदि के पत्राचार से पता चलता है कि अहस्तक्षेप के इस काल में भी खेतड़ी का अंग्रेजों के साथ सम्पर्क निरन्तर बना रहा।[10] इन पत्रों में खेतड़ी द्वारा अंग्रेजों को दी गई सेवा का मूल्य स्वीकार किया गया और खेतड़ी को उसकी रक्षा का विश्वास भी दिलाया गया है।[11]

लार्ड हैस्टिंग्सकम्पनी को भारत में सर्वोच्च स्थान पर स्थापित करना चाहता था। अतः उसके समय देशी राज्यों के प्रति कम्पनी की अहस्तक्षेप की नीति में पुनः परिवर्तन आया। हैस्टिंग्स ने उत्तर भारत पर से पिण्डारियों का आतंक एवं मराठा शक्ति को परास्त करने तथा राजपूत रियासतों से सहयोग लेने के लिए दिल्ली के गवर्नर मेटकाफ को अधिकृत किया। मंदसौर की संन्धि (जनवरी 1818 ई.) के द्वारा होल्कर के राजपूताना पर से अपना अधिकार छोड़ देने से अंग्रेजों का राजपूत रियासतों से संन्धियां करने का मार्ग प्रशस्त हो गया। अंग्रेज राजपूतों पर संन्धि करने का दबाव बनाए हुए थे, परन्तु जयपुर आदि रियासतें अंग्रेजों द्वारा 1803 ई. की सन्धियां भंग करने के कारण उनसे सन्धि करने के लिए तैयार नहीं थे।

***व्याख्याता इतिहास, जीएस एस गर्ल्स कॉलेज चिड़ावा (झुंझुनूं)**

अंग्रेजों की जयपुर के साथ संन्धि की सम्भावना को और उससे खेतड़ी पर पड़ने वाले भावी प्रभाव को देखते हुए खेतड़ी नरेश अभयसिंह ने ब्रिटिश रेजिडेंट मेटकॉफ को पत्र लिख कर खेतड़ी पर ब्रिटिश संरक्षण जारी रखने का निवेदन किया। खेतड़ी की इस प्रकार की आशंका और ब्रिटिश संरक्षण के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण पत्र दिनांक 21 जनवरी 1818 ई. में चार्ल्स मेटकॉफ द्वारा राजा अभयसिंह तथा उसके पुत्र कुंवर बख्तावर सिंह को लिखा गया था। यह पत्र तसल्लीनामा के नाम से प्रसिद्ध है।[12] तसल्लीनामा वस्तुतः अंग्रेजी सरकार द्वारा की गई चालाक घोषणा थी जिसमें भविष्य में अंग्रेजी साम्राज्य में खेतड़ी ठिकाने का स्थान निर्धारित किया गया था।

तसल्लीनामा में लिखा था कि अंग्रेजी सरकार की जयपुर रियासत के साथ सन्धि नहीं होने की स्थिति में खेतड़ी अंग्रेजी सरकार के अधीन समझी जाएगी और उसके साथ की गई संन्धि के अनुसार कार्य किया जाएगा। परन्तु यदि अंग्रेजों की जयपुर के साथ संन्धि हो जाती है तो खेतड़ी को जयपुर के साथ पूर्ववत् सम्बंध रखने की अनुमति दी जायेगी और उस अवस्था में भी अंग्रेजी सरकार खेतड़ी की रक्षा करती रहेगी तथा खेतड़ी के राजा पीढ़ी दर पीढ़ी अंग्रेजी सरकार के कृपापात्र बने रहेंगे। तसल्लीनामा में खेतड़ी की जिस संन्धि की चर्चा की गई है वह वस्तुतः खेतड़ी के राजा अभय सिंह और कुंवर बख्तावर सिंह का अंग्रेजी सरकार के प्रति समर्पण का प्रतिज्ञा पत्र है।[13] इसमें लिखा है–''चूंकि हम लोग सच्चे प्रेम एवं भक्ति से अंग्रेजी सरकार की रक्षा में आये हैं, अतः इस लेख पत्र के अनुसार हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जिस प्रकार आज तक कर देकर एवं सामरिक सेवा कर जयपुर के हम मित्र बने रहे हैं उसी प्रकार सच्चाई एवं ईमानदारी से हम अंग्रेजी राज्य के मित्र बने रहेंगे तथा बिना किसी प्रकार के असमंजस के उन की आज्ञा को शीघ्रतापूर्वक पालन किया करेंगें। अतः यह संक्षिप्त सन्धि पत्र लिख दिया जाता है जिसमें यह हमारी प्रतिज्ञा का निर्विवाद प्रमाण समझा जाए। तारीख 21 वीं जनवरी 1818 ई.।''[14]

मेटकॉफ द्वारा लिखा गया तसल्लीनामा वास्तव में उसके द्वारा जयपुर दरबार पर संन्धि के लिए डाले जा रहे दबाव की कूटनीति का एक हिस्सा था।[15] 1803 ई. की सन्धि को जिस प्रकार जयपुर के असहयोग करने के झुठे आधार पर अंग्रेजों ने तोड़ दिया था, उससे और अंग्रेजों द्वारा मांगी जा रही ट्रिब्यूट की रकम पर विवाद होने के कारण मेटकॉफ द्वारा 1816 ई. से संन्धि के लिए किये जा रहे प्रयासों के प्रति जयपुर ने कोई विशेष सकारात्मक रूचि प्रकट नहीं की थी।[16] इस कारण मेटकॉफ ने जयपुर पर दबाव डालने के लिए जयपुर के अधीन खेतड़ी और उनियारा जैसे बड़े ठिकाने को अंग्रेजों के साथ पृथक संन्धि करने के लिए प्रेरित

किया।[17] इसी सन्दर्भ में खेतड़ी नरेश अभयसिंह ने कुंवर बख्तावर सिंह को दिल्ली भेजा था।

मेटकॉफ की दबाव की कूटनीति अंततः सफल रही। तसल्लीनामा लिखे जाने के कुछ दिन बाद 2 अप्रेल 1818 ई. में जयपुर ने अंग्रेजों के साथ संन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये। 15 अप्रेल 1818 ई. गर्वनर जनरल द्वारा पुष्ट (त्जपलि)करने के साथ ही यह संन्धि लागू हो गई।[18] जैसा कि मेटकॉफ ने तसल्लीनामा में उल्लेख किया था, 1818 ई. की संन्धि की धारा 8 के अनुसार अंग्रेजों ने जयपुर को उसके अधीनस्थ सरदारों जिनमें खेतड़ी भी शामिल था, पर नियन्त्रण के पूर्ण अधिकार सौंप दिये गये।[19] हालांकि अपनी विशिष्ट स्थिति के कारण कोटपूतली के सम्बंध में खेतड़ी अभी भी अंग्रेजों के अधीन बना रहा।

अपने लाभ के लिए खेतड़ी को जयपुर से पृथक् शक्ति बनने के लिए पहले प्रेरित करने और उसके बाद उसे विरोधी जयपुर के हवाले कर देने की अंग्रेजों की अवसरवादी नीति के परिणाम खेतड़ी के लिए कम घातक नहीं हुए। खेतड़ी द्वारा 1803 ई. में अंग्रेजों के प्रति अपनाई गई स्वतन्त्र नीति से जयपुर पहले से ही नाराज था। 1806 ई. में अंग्रेजों द्वारा जयपुर के साथ 1803 ई. में की गई संन्धि को तोड़ देने और उसे मराठों और पिण्डारियों के रहमोंकर्म पर छोड़ देने से तथा जयपुर के ही अधीनस्थ खेतड़ी को पूर्ववत संरक्षण प्रदान किये रहने से जयपुर खेतड़ी से ओर अधिक रूष्ट हो गया था। 1816 ई. में अंग्रेजों के साथ खेतड़ी आदि बड़े ठिकानों द्वारा पृथक संन्धि किये जाने की सम्भावना ने जयपुर की क्रोधाग्नि को ओर अधिक भड़का दिया था। 1818 ई. की संन्धि के बाद जैसे ही जयपुर को खेतड़ी पर नियन्त्रणकारी शक्तियां प्राप्त हुई वह खेतड़ी को अस्थिर करने के लिए अधीर हो उठा। इसी कारण भविष्य में खेतड़ी को बहुत सी कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन्ही विकट परिस्थितियों में राजा अभयसिंह की 1826 ई. में मृत्यु हो गई।

खेतड़ी और अंग्रेजों के इन प्रारम्भिक सम्बंधों का लाभ दोनों पक्षों को मिला। अंग्रेजों को आसान सैन्य सहायता एवं एक मित्र का क्षेत्र उपलब्ध होने का फायदा मिला तो दूसरी ओर खेतड़ी को मराठों से सुरक्षा और 290 वर्गमील क्षेत्रफल एवं 40042 रूपये वार्षिक आय का कोटपूतली का परगना प्राप्त हुआ।[20] साथ ही कोटपूतली के सम्बन्ध में खेतड़ी और अंग्रेजी सरकार के मध्य प्रत्यक्ष राजनीतिक सम्बंध भी कायम हुए, जो भविष्य में खेतड़ी के लिए बड़े लाभदायक सिद्ध हुए। दूसरी ओर खेतड़ी के अंग्रेजों के साथ स्थापित सम्बंधों के नकारात्मक प्रभाव भी पड़े। जयपुर दरबार को उसके अधीनस्थ खेतड़ी द्वारा अंग्रेजों के साथ प्रत्यक्ष सम्बंध स्थापित करना पसंद नहीं आए। अंग्रेजों के साथ सम्बंध स्थापित हो जाने

के बाद सर्वोच्च शक्ति के सम्बंधों के सन्दर्भ में खेतड़ी की दोहरी स्थिति हो गई। कोटपूतली के मामले में उसमें ब्रिटिश जागीरदार की हैसियत हासिल की जबकि ठिकाने के शेष भाग के मामले में वह जयपुर रियासत के अधीन था। क्षेत्राधिकार को लेकर खेतड़ी के जयपुर रियासत के साथ सम्बंध बिगड़े हुए थे, अतः खेतड़ी कोटपूतली परगना के अतिरिक्त क्षेत्र के सम्बंध में भी वह जयपुर की मध्यस्थता स्वीकार करने के स्थान पर अंग्रेजों के साथ प्रत्यक्ष सम्बंध स्थापित करने का इच्छुक था। जयपुर रियासत इन सम्बंधों के कारण खेतड़ी से नाराज हो गया। खेतड़ी के अंग्रेजों के साथ सम्बंध और जयपुर की नाराजगी ने खेतड़ी के आने वाले कल को बहुत अधिक प्रभावित किया।

संदर्भ एवं टिप्पणी

1. अभयसिंह को लार्ड लेक द्वारा 6 अप्रेल 1806 ई में दी गई कोटपूतली की सनद। सनद में अभयसिंह को 'राजा अभयसिंह' लिखा है।
2. कन्हैयालाल सनाड्य, हिस्ट्री ऑफ खेतड़ी, पेज.77
3. अनाम ब्राह्मण, इतिहास राज्य खेतड़ी (हस्तलिखित) पृष्ठ 25–26.
4. कन्हैयालाल सनाड्य, हिस्ट्री ऑफ खेतड़ी, पेज 77.
5. लोकेट रिर्पोट, पेज 16–17.
6. अभयसिंह को दिनांक 30 मई 1805 को लार्ड लेक का लिखा पत्र
7. लोकेट रिर्पोट, पेज 17.
8. वही, पेज 16.
9. वही, पेज 17.
10. राजा अजीत सिंह (खेतड़ी),खेतड़ी की राजनीतिक अवस्था का संक्षेप विवरण ;हस्तलिखितद्ध, पृष्ठ 32.
11. वही, पृष्ठ 32.
12. लेटर फ्रॉम चार्ल्स मेटकॉफ टू राजा अभय सिंह एण्ड कुंवर बख्तावार सिंह, डेटेड जनवरी 21, 1812.
13. अभयसिंह के काल के कई पत्रों में राजा अभयसिंह के नाम के साथ–साथ कुंवर बख्तावर सिंह का नाम भी लिखा है। इसका कारण यह है कि बख्तावर सिंह अपने कुंवर काल में ही राज कार्य में पिता का हाथ योग्यतापूर्वक बंटाने लगे थे। अभयसिंह के काल में बागौर विजय, लक्ष्मणगढ़ अभियान आदि में उनकी ही भूमिका अधिक महत्वपूर्ण थी।
14. अजीतसिंह (खेतड़ी), खेतड़ी की राजनीतिक अवस्था का संक्षेप विवरण, (हस्तलिखित), पृष्ठ 33.

15. मोहन सिंह मेहता, लॉर्ड हेस्टिंग्स एण्ड दी इंडियन स्टेट्स (1813–1823), पेज 136.
16. डा. रामप्रसाद व्यास, आधुनिक राजस्थान का बृहत् इतिहास, पृष्ठ 247
17. मोहन सिंह मेहता, लॉर्ड हेस्टिंग्स एण्ड दी इंडियन स्टेट्स (1813–1823), पेज 136.
18. ऐचिसन, ट्रिटीज एंगेजमेन्ट एण्ड सनद्स, वोल्युम 3, ट्रिटी विद जयपुर.
19. ऐचिसन, ट्रिटीज एंगेजमेन्ट एण्ड सनद्स, वोल्युम 3, ट्रिटी विद जयपुर. आर्टीकल 8
20. टकर, सर्वे एण्ड सेटलमेन्ट रिर्पोट ऑफ कोटपूतली परगना, पेज 3 एवं 4.